किसी से ना कहना

मीनाक्षी स्वामी

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

किसी से न कहना

मीनाक्षी स्वामी

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
पहला संस्करण 1993 : मूल्य : 8.00

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110091

प्रकाशकीय

प्रौढ़ शिक्षा अभियान में नवसाक्षरों के लिए रुचिकर साहित्य उपलब्ध कराने हेतु भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ निरन्तर प्रयासरत रहा है। बदलते समय के साथ ही नवीनतम विधाओं की जानकारी नवसाक्षर तक पहुंचाने के उद्देश्य से समय-समय पर लेखक कार्यशालाओं का आयोजन भी संघ करता है।

इसी दिशा में प्रो० (श्रीमती) मीनाक्षी स्वामी की यह पुस्तक पाठकों को प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता है।

प्रजातन्त्र में "मत" का अधिकार अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। शस्त्र है जो हर मतदाता के पास है परन्तु इसका उपयोग, प्रलोभन एवं संकुचित विचारों से ऊपर उठकर कितनी सावधानी-पूर्वक किया जाना चाहिए इसी बात को लेखिका ने अपनी इस लघु पुस्तक में उठाया है।

हमें आशा है कि पाठकों को पसन्द आएगी।

कैलाश चौधरी
महासचिव
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

नयी दिल्ली-110002
26 फरवरी, 1993

किसी से न कहना

"भैया जी, भाभी को समझाना रे, हाथी पर मोहर लगाना रे ऽ ऽ ऽ ऽ"

जीप में भोंपू लगा है, कोई फटे बांस से गले से चीख-चीख कर गा रहा है।

जीप धूल उड़ाती आगे बढ़ गई।

अभी धूल उड़ना बंद भी न हुई थी कि भोंपू वाली बैलगाड़ी आ गई, "माताओं-बहनों याद रखना ऊंट का निशान, आपका अपना निशान ऊंट का निशान।"

कभी कोई घर पर मिलने आते हैं। बड़े-बड़े आदमी हाथ जोड़कर कहते हैं, "बकरी पर मोहर लगाना याद रखना, बहनजी।"

जगह-जगह तसवीरें लगी हैं।

कोई आता है कहता है, "घोड़े पर मोहर लगाना" बिल्ले दे जाता है।

कोई टोपी दे जाता है। टोपी पर चूहा बना है। कहता है, "चूहे पर निशान लगाना।"

बच्चे खुश होकर बिल्ले, टोपी, पर्चे बटोर रहे हैं।

बच्चों को बड़ा मजा आ रहा है। सुबह से इन बैल-गाड़ियों, मोटरों के पीछे भागना शुरू करते हैं। शाम को भी आकर पहले इकट्ठे किये बिल्ले, टोपी, पर्चे एक-दूसरे को दिखाते हैं। देखते हैं किसके पास ज्यादा हैं ? तब तक भी इन्हें खाने की याद नहीं आती है। रसोई का काम इनके मारे निपट ही नहीं पाता है। मां परेशान हैं, चिल्ला-चिल्लाकर थक जाती हैं, मगर बच्चे हैं कि सुनते ही नहीं। रोज तो हाय भूख, हाय भूख करके सुबह से पूरा घर सिर पर उठाये रहते थे।

गांव भर में बड़ी चहल-पहल है, रौनक-सी लगी है, लगता है जैसे कोई त्यौहार आने वाला है।

चुनाव करीब आ गये हैं। जहां देखो वहीं झंडी, पोस्टर लगे हैं। कहीं भी दीवार खाली नहीं है।

इसी शोर-गुल में चुनाव का एक दिन रह गया और बिल्कुल शांति हो गई। देखते-देखते मतदान का दिन भी आ गया।

राधा, हरिया की बहू, जानकी, जानकी की सास, मोती की बहू सब इकट्ठी होकर वोट देने गईं।

राधा की चाची बीमार थी, वे घर पर ही रहीं। कौशल्या की सास शहर गई थी, घर पर बच्चों को देखने वाला कोई नहीं था, वह वोट देने गई ही नहीं। सीता को रोटी खाकर आलस आ गया, वह भी नहीं गई।

अगले दिन दोपहर को सब चमेली दीदी के पढ़ने को गईं।

चमेली दीदी पढ़ी-लिखी थी। वे बेटी तो उसी गांव

की थी, पर शहर में अपनी मौसी के घर रहकर उन्होंने कॉलेज तक की पढ़ाई की थी।

दोपहर को वे सबको पढ़ना-लिखना सिखाती थी और नई-नई बातें भी बताती थी। गांव की महिलाएं उनका आदर करती थीं और बात भी मानती थीं।

दीदी भीतर कुछ काम निपटा रही थी। इस बीच

सब बातें करने लगीं।

कल के चुनाव की बात चल पड़ी।

राधा बोली, "मैंने तो घोड़े पर निशान लगाया,

घोड़े वाले ने कितना सुन्दर बिल्ला दिया था। मेरा राजू तो खूब खेला उससे।"

हरिया की बहू बोली, "मैं भी घोड़े पर ही मोहर लगाना चाहती थी, पर क्या करूं ? ससुर ने हाथी का बोला था, सो हाथी पर ही निशान लगा दिया।"

जानकी बोली, "हमें तो बाऊजी ने बाहर ही समझा दिया था, चौथे नम्बर पर बकरी के निशान का। हम सास-बहू ने तो बकरी पर ही निशान लगाया।"

तभी जानकी की सास बोली,

"नहीं री, मुझे तो कुछ सूझा ही नहीं। ठीक से दिखा ही नहीं, सो मैंने तो अंदाज से ही निशान लगा दिया, जाने कहां लगा, पता नहीं।"

इस पर सब हंस पड़ी। जानकी की सास चिढ़ गई बोली, "बूढ़ी औरत की हंसी उड़ाती हो। जैसे तुम सब तो सदा ऐसी ही रहोगी।"

जानकी बोली, "अम्मा जाने भी दो। इन सबकी तो आदत ही ऐसी है।"

अब तक सब चुप हो गई थीं। पल भर को सन्नाटा छा गया। वैसे जानकी की सास कक्षा में पढ़ने नहीं आती थी। मगर, आज घर में कोई काम नहीं था और उसकी सहेली धनिया भी अपने बड़े बेटे के पास, शहर गई थी, सो समय बिताने को वह कक्षा में आ गई थी।

तभी सन्नाटे को तोड़ती मोती की बहू बोली, "मैंने

तो हाथी पर निशान लगाया। हाथी वाले मेरे पिताजी के दोस्त हैं।

इतने में गुलाबो मालन हाट करके लौटी। उसने मोती की बहू की बात सुन ली थी। बोली, "सब्जी-भाजी बेचकर जब मैं चार बजे वोट डालने पहुंची, तो वहां पर वोट डलवाने वाली बाई साब ने कहा, "तुम्हारा वोट तो कोई डाल चुका है, अब तुम जाओ।" "मुझे बिना वोट डाले ही आना पड़ा।"

तब तक चमेली दीदी आ गई। सब खड़ी हो गईं। सबको बैठने का कहकर चमेली दीदी भी बैठ गईं और बोली, "मैंने भीतर तुम सबकी बातें सुन ली। अब तुम मेरी बात सुनो, मैंने अपना वोट किसे दिया, मैं तुम्हें नहीं बताऊंगी।"

सब एक साथ बोल पड़ीं, "क्यों ?" जानकी पूछने लगी, "क्यों दीदी ? भला इसमें न बताने की क्या बात है ? हम सबने भी तो बताया है।"

चमेली बोली, "अपना वोट किसे दिया है, यह बात किसी को भी बताने की नहीं है।"

सब चकित हो गईं।

हरिया की बहू बोली, "दीदी, यह बात छुपाने की क्यों है ?"

चमेली ने समझाया, "हम सबको सरकार ने जैसे वोट डालने का अधिकार दिया है, वैसे ही इसे गुप्त रखने याने किसी को भी नहीं बताने का भी अधिकार दिया है।

इसीलिये तो तुम सबने पर्दे के पीछे जाकर निशान लगाया था। अब बताओ ? भला, यह बात सबको बताने की होती तो सबके सामने ही निशान न लगाती ?

सबकी समझ में बात थोड़ी-थोड़ी तो आ गई थी।

पर, राधा ने पूछा, "तो क्यों दीदी, राजू के बापू को भी नहीं बतायें क्या ?"

अबकी बार चमेली दीदी हंस पड़ी। बोली, नहीं री। किसी को भी नहीं।"

राधा ने पूछा, "लेकिन दीदी, कभी किसी को मालूम पड़ जाये कि हमने उसे वोट नहीं दिया तो दुश्मनी न निकालेगा।"

सबने राधा की इस बात का जोर से "हां" बोलकर समर्थन किया। सभी का ध्यान इस बात पर गया था।

परन्तु चमेली दीदी बड़ी जानकार थी। उन्होंने समझाया, "देखो, तुमने वोट किसे दिया है, यह तो कोई भी नहीं जान सकता है। सरकार ने ऐसी ही व्यवस्था कर दी है। पेटी के भीतर जाकर सारे वोट मिल जाते हैं। सब एक जैसे होते हैं किसी पर भी तुम्हारा नाम थोड़े ही लिखा रहता है। तुम निश्चिन्त रहो, तुमने अपना वोट किसे दिया है, जब तक तुम न बताओ किसी को नहीं मालूम होगा।"

हरिया की बहू बोली, "लेकिन हमने तो ससुर जी के बताये निशान पर ही मोहर लगाई थी।"

चमेली दीदी बोली, "यही तो गलती है तुम्हारी।

सरकार ने यह अधिकार तुम्हें दिया है और तुमसे यही आशा भी रखी है कि तुम अपने विवेक से सोच विचार कर वोट दोगी। तुम्हें ऐसा ही करना भी चाहिये।"

जानकी ने पूछा, "लेकिन हमें भला क्या मालूम कि किसे अपना वोट देना चाहिये।"

चमेली ने कहा, "इसीलिए तो तुम्हें मैं पढ़ना-लिखना सिखा रही हूं कि तुम जानो कि देश में क्या हो रहा है? कौन व्यक्ति देश का शासन करने के लायक है। यदि पढ़ना-लिखना सीखकर भी तुम दूसरों से पूछकर वोट दोगी, तो तुम्हें सिखाना बेकार है। तुम अखबार पढ़ो, रेडियो, टी.वी. के समाचार सुनो और जानकारी निकालो कि चुनाव में कौन खड़ा हुआ है? वह कैसा काम करता है? फिर सोच-समझ कर वोट दो।"

हरिया की बहू बोली, "मगर दीदी। हमें टाइम कहां मिलता है ?"

चमेली ने समझाया, "तुम दिन भर दूसरी बातों में भी तो फालतू समय बिताती हो। तभी बातचीत में एक-दूसरे से पूछताछ करो। घर में पति से बातचीत करो और अपने अधिकारों के सही उपयोग के लिए तुम्हें अखबार तो पढ़ना ही चाहिए। तुम टी.वी. पर चित्रहार, सिनेमा और दूसरे कार्यक्रम देखती हो, जब समाचार आते हैं तो ध्यान से सुनने के बदले उठ जाती हो।"

जानकी की सास बोली, "वो तो सब ठीक है री चमेली, मगर तू ये तो बता कि यदि मुझे वहां जाकर आंखों से कुछ सूझे ही नहीं, तो मैं भला क्या करूं।"

चमेली बोली, "अम्मा, आपको कम दिखने की शिकायत थी तो अपने भरोसे के किसी को भी आप अपने साथ पर्दे के पीछे ले जा सकती थीं। वह आपके बताये निशान पर मोहर लगा देता।"

जानकी की सास को बड़ा अचरज हुआ। बोली, "अच्छा ऐसा भी हो सकता है क्या ?"

चमेली ने कहा, "हां, अम्मा। कोई व्यक्ति अंधा हो, कम दिखता हो, कमजोर हो, हाथ टूटा हो तो वह अपने भरोसे के किसी भी व्यक्ति से अपने सामने अपना निशान लगवा सकता है।"

जानकी की सास बोली, "चलो, यहां आने से तो मुझे बड़े काम की बातें मालूम पड़ीं, अब मैं रोज आया

करूंगी। कम दिखने से पढ़ न सकूं, मगर कुछ नई बातें तो मालूम पड़ेंगी।"

चमेली बोली, "हां अम्मा। जरूर आना।"

तभी अचानक चम्पा आ गई। पूछने लगी, "क्या बातें हो रही हैं। मुझे भी बताओ भला।"

चमेली ने कहा, "जरूरी बातें बता रही हूं, आओ

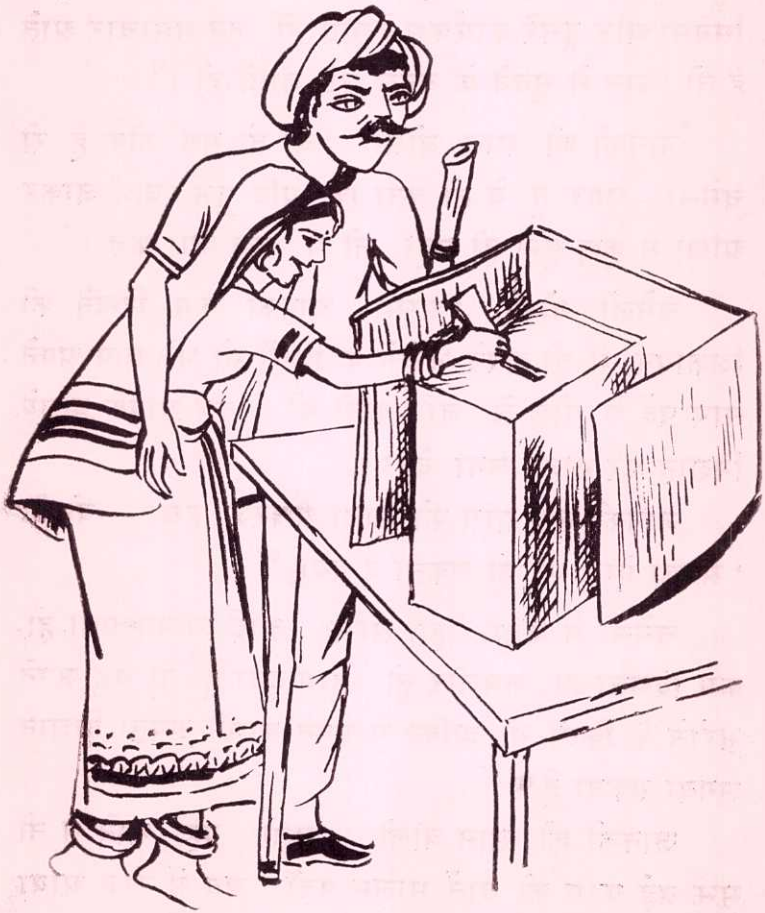

तुम भी सुनो।" चम्पा बोली, "तब तो मैं अच्छे मौके से आ गई हूं। दीदी, मुझे भी बताओ, जरूरी बातें।"

चमेली दीदी ने कहा, "वो तो जरूर बताऊंगी। पहले जरा तुम्हारी खबर ले लूं। ये तो बताओ भला, कल वोट देने मतदान केन्द्र कैसे गई थी ?"

चम्पा चहककर बोली, "दीदी, ऊंट के निशान वाले हमें मोटर में लेने आ गये थे। हम तो फुर्र से मोटर में बैठकर गये थे। दीदी सच में बड़ा मजा आया। हमारा गोपी भी मोटर में बैठकर ताली बजा-बजाकर खूब खुश हो रहा था। एक बार हार्न की आवाज क्या सुन ली, कल से पीप-पीप की रट लगा रखी है। दीदी मैंने तो ऊंट पर ही निशान लगाया।"

चमेली गुस्से में भरकर बोली, "मालूम है तूने कितनी बड़ी गलती की ?"

चम्पा चौंक पड़ी, बोली "गलती....दीदी हमने क्या गलती की।"

उसके भोलेपन से चमेली का गुस्सा कुछ कम हो गया था। बोली, "देखो चम्पा, तुम पूरे गांव में इधर-उधर पैदल घूमती हो। क्या इतनी-सी दूर मतदान केन्द्र तक पैदल नहीं जा सकती थी।"

चम्पा ने कहा, "दीदी, जा तो सकती थी, पर वो ऊंट वाले हमें लेने आ गये थे, फिर हमारा भी बड़ा मन था मोटर में बैठने का और गोपी भी जिद करने लगा, सो हम बैठ गये।"

चमेली ने कहा, "यही तो गलती की बहन तुमने। किसी की मोटर में बैठकर जाना और अपना वोट उसे दे देना। मतलब उस ऊंट वाले ने मोटर में बिठाकर तुम्हारा वोट तुमसे खरीद लिया।"

चम्पा बोली, "लेकिन दीदी, हमने उनसे पैसे थोड़ी लिए।"

चमेली ने समझाया, "देखो चम्पा, चाहे पैसे लो या मदद लो या चीज लो एक ही बात है। हम कई बार भुनिया से बरतन साफ करवाकर उसे पैसे न देकर खाना दे देते हैं। वैसे ही यह बात भी है। यही मैं सबको समझा रही हूं।"

बोलते-बोलते चमेली का गला सूख गया उसने राधा से पानी मांगा। राधा रसोई में से पानी लेकर आई। पानी पीकर चमेली फिर समझाने लगी, "अपना वोट अपने आप सोच-विचार करके देना चाहिये। किसी के दबाव में आकर, चाहे वह तुम्हारे पति, पिता, ससुर, भाई, जेठ ही क्यों न हों वोट नहीं देना चाहिये। किसी चीज, रुपये या काम के बदले या दोस्ती के लिहाज में भी किसी को वोट नहीं देना चाहिये। तुम्हें पढ़ाना-लिखाना तभी सफल है, जब तुम सोच-विचार कर अपना वोट लायक व्यक्ति को चुनकर दो, नहीं तो मेरी रोज की सारी मेहनत बेकार हैं। फिर कौशल्या, राधा की चाची और सीता तो वोट देने ही नहीं गई। बड़ी गलत बात है।"

सीता बोली, दीदी क्या हुआ, जो नहीं गये तो ?

चमेली ने समझाया, "देखो, तुम्हें देश का नागरिक होने के कारण यह महत्वपूर्ण अधिकार मिला है। हमारे देश में आजादी के बाद प्रजातंत्र व्यवस्था हुई है। प्रजातंत्र व्यवस्था का मतलब है, जनता का राज।"

हरिया की बहू आंखें फाड़कर बोली, "दीदी, जनता का राज याने हमारा" चमेली बोली, "हां। तुम्हारा"

जानकी की सास हंस पड़ी बोली, "मगर हम तो कुछ करते ही नहीं।"

चमेली ने समझाया, "हम ही तो सब कुछ करते हैं, जब तक वोट देने जाते हैं, तो हम जिसको चुनते हैं, वही सरकार बनाता है। पांच साल बाद हमें फिर मौका

मिलता है, यदि हमारा चुना हुआ नेता ठीक से काम न करे, तो हम उसे छोड़कर किसी और को भी चुन सकते हैं।"

"हमें वोट देने का अधिकार देकर राज करने का जो अवसर दिया हैं उसका हम ही उपयोग नहीं करेंगे तो राज चलाने में हमारा अधिकार हमने खुद ही खोया यह माना जायेगा।"

सीता बोली, "लेकिन दीदी, हमारे एक वोट से क्या ?"

चमेली ने कहा, "देखो, बूंद-बूंद से घड़ा भरता है। तुम थोड़े-थोड़े रुपये जोड़कर कितने इकट्ठे कर लेती हो। वैसे ही हर एक के वोट का बड़ा महत्व है और हर किसी को वोट डालने जरूर जाना चाहिये।"

गुलाबो मालन बोली, "दीदी, मैं तो गई भी थी, वोट डालने, पर मेरे नाम का वोट तो पहले ही कोई डाल गया था, ऐसा वहां पर चुनाव करवाने वाली बाई साब ने बताया था।"

चमेली ने कहा, "हां गुलाबो, कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है। तुम्हारा वोट और कोई डाल गया। तुम्हें उन बाई साहब से कहना था तो वे तुम्हें भी वोट देती। तुम्हारा वोट पेटी में न डालकर लिफाफे में डाला जाता। मगर तुम्हें उनसे कहना था। हमारे अधिकार का ध्यान हमें ही रखना होगा और उसका उपयोग करने में चूकना नहीं है। लापरवाही भी नहीं करना है तभी पढ़ने-लिखने की सफलता है।"

अब सब समझ गई थीं। एक स्वर से बोलीं, "दीदी हम समझ गये, अबकी बार सोच-विचार कर अपनी मर्जी से वोट देंगे और किसी को भी नहीं बतायेंगे। आपको भी नहीं।"

चम्पा हंस पड़ी, बोली, "हां–हां, मुझे भी नहीं।"